# ८. बालगोबिन भगत

## कहानी का सारांश

यह पाठ एक ऐसे संत-समान गृहस्थ की जीवनगाथा प्रस्तुत करता है, जिन्होंने अपने जीवन को भक्ति, सत्य और सरलता में ढाल लिया था।

बालगोबिन भगत मँझोले कद के गोरे-चिट्टे, सादे स्वभाव और कबीरपंथी विचारों वाले व्यक्ति थे। वह गृहस्थ जीवन जीते थे—खेती-बारी करते, बेटा-पतोहू के साथ रहते, परंतु आचरण, विचार और भक्ति में साधु थे।

उनका सम्पूर्ण जीवन कबीर की शिक्षाओं और भजनों पर आधारित था। वे झूठ नहीं बोलते, किसी की वस्तु नहीं छूते और हर काम निष्ठा से करते। खेत में जो उपज होती, पहले कबीरपंथी मठ (जिसे वे 'साहब का दरबार' कहते) में अर्पित करते, फिर जो प्रसाद मिलता उसी से जीवन-यापन करते।

बालगोबिन भगत का संगीत अद्भुत और मनमोहक था। उनके भजनों की ध्वनि सुनकर स्त्रियाँ, बच्चे, किसान सभी झूम उठते। खेतों में रोपनी करते हुए, संध्या या प्रभात में गाते हुए, यहाँ तक कि अँधेरी वर्षा-रातों में भी उनका गान गाँव को झंकृत कर देता।

उनकी संगीत-साधना का चरम उस समय दिखाई दिया जब उनके इकलौते पुत्र की मृत्यु हुई। उस समय भी उन्होंने शोक के स्थान पर भक्ति और संगीत को चुना। वे गाते रहे और अपनी पतोहू को समझाते रहे कि आत्मा परमात्मा से मिलने चली गई है, अतः रोने के बजाय यह आनंद का अवसर है। पतोहू के विरोध के बावजूद उन्होंने उसे दूसरा विवाह करने के लिए भेज दिया, क्योंकि उनका मानना था कि मोह-माया में बँधकर जीवन को नहीं रोकना चाहिए।

उनकी मृत्यु भी संतों जैसी हुई। गंगा-स्नान करके लौटने पर तबीयत बिगड़ने लगी, किंतु उन्होंने भक्ति और नियमों को नहीं छोड़ा। अंततः एक दिन उनका शरीर शांत हो गया, पर उनके गीत और उनकी आत्मा का विश्वास अमर हो गया।

**निष्कर्ष:-** बालगोबिन भगत का जीवन यह सिखाता है कि सच्चा संत वही है जो गृहस्थ जीवन जीते हुए भी भक्ति, सत्य, त्याग और आत्मसंयम से जीवन को साधना बना दे। उनका संगीत, भक्ति और विश्वास आज भी प्रेरणादायी है।

## शब्दार्थ

- **मँझोला** - न बहुत बड़ा न बहुत छोटा
- **कमली** - कम्बल
- **पतोहू** - पुत्रवधू / पुत्र की स्त्री
- **रोपनी** - धान की रोपाई
- **जटाजूट** - जटाओं का समूह
- **खामखाह** - अनावश्यक



www.onepointlearning.com

- **कलेवा** - सवेरे का जलपान
- **पुरवाई** - पूरब की ओर से बहने वाली हवा
- **मेंड़** - खेत के किनारे मिट्टी के ढेर से बनी ऊँची-लम्बी, खेत को घेरती आड़
- **अधरतिया** - आधी रात
- **झिल्ली** - झींगुर
- **दादुर** - मेंढक
- **खँजड़ी** - डफली के ढंग का, किन्तु आकार में उससे छोटा वाद्ययंत्र
- **निस्तब्धता** - सन्नाटा
- **लोही** - प्रातःकाल की लालिमा
- **कुहासा** - कोहरा
- **आवृत** - ढका हुआ, आच्छादित
- **पोखर** - तालाब
- **टेरना** - सुरीला अलापना
- **श्रमबिंदु** - परिश्रम के कारण आई पसीने की बूंद
- **संझा** - संध्या के समय किया जाने वाला भजन-पूजन
- **करताल** - एक प्रकार का वाद्य
- **कुश** - एक प्रकार की नुकीली घास
- **बोदा** - कम बुद्धि वाला
- **संबल** - सहारा

www.onepointlearning.com

# प्रश्न - अभ्यास

1. **खेती-बाड़ी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे?**

   **उत्तर:**

   - कबीर के आदर्शों पर चलते थे और उन्हीं के गीत गाते थे।
   - वे कभी झूठ नहीं बोलते थे और खरा व्यवहार रखते थे।
   - वे किसी से भी सीधी बात करने में संकोच नहीं करते थे और न ही किसी से झगड़ा मोल लेते थे।
   - वे अपनी चीज़ किसी को नहीं देते थे और न ही किसी की चीज़ को बिना पूछे छूते थे।
   - वे अपनी हर एक चीज़ को 'साहब' (कबीर) का मानते थे, यहाँ तक कि अपने खेत में जो पैदा होता था, उसे भी पहले कबीरपंथी मठ में ले जाकर प्रसाद के रूप में लेते थे।

   इन सभी गुणों के कारण, वे गृहस्थ होते हुए भी सच्चे साधु थे।

2. **भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?**

   **उत्तर:** भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले इसलिए नहीं छोड़ना चाहती थी क्योंकि वह जानती थी कि बालगोबिन भगत की देखभाल करने वाला और कोई नहीं था। वह उनके बुढ़ापे में भोजन बनाने और सेवा करने की चिंता करती थी।

3. **भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं?**

   **उत्तर:** बेटे की मृत्यु पर बालगोबिन भगत ने शोक व्यक्त नहीं किया, बल्कि उत्सव मनाया। उन्होंने बेटे के मृत शरीर को एक चटाई पर लिटाकर, उसे फूल और तुलसीदल से सजाया और उसके पास बैठकर कबीर के भक्ति गीत गाते रहे। वे अपनी पुत्रवधू से भी शोक न करने, बल्कि यह सोचकर उत्सव मनाने को कहते थे कि आत्मा परमात्मा से मिल गई है, जो एक आनंद की बात है।

4. **भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए।**

   **उत्तर:** बालगोबिन भगत मझोले कद के, गोरे-चिट्टे व्यक्ति थे, जिनकी उम्र साठ से ऊपर थी। उनके बाल पक चुके थे और वे दाढ़ी या जटाएँ नहीं रखते थे। वे बहुत कम कपड़े पहनते थे- कमर में एक लँगोटी और सिर पर कबीरपंथियों जैसी कनफटी टोपी। जब जाड़ा आता तो वे एक काली कमली ओढ़ लेते थे। उनके माथे पर रामानंदी चंदन और गले में तुलसी की जड़ों की माला रहती थी। वे दिखने में गृहस्थ लगते थे, लेकिन उनके विचार और आचरण एक सच्चे साधु के थे।

5. **बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?**

   **उत्तर:** बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के लिए अचरज का कारण इसलिए थी क्योंकि वे अत्यंत कठोर नियमों का पालन करते थे। वे भोर में उठकर दो मील दूर नदी में स्नान करने जाते थे, फिर वापस आकर पोखरे पर बैठकर गीत गाते थे। यह सब वे ठंड में भी करते थे। बुढ़ापे में भी उनका यह नियम नहीं टूटा। वे अपने सिद्धांतों पर अडिग रहते थे, जैसे कि बिना पूछे किसी की चीज़ न लेना और कभी झूठ न बोलना, जो लोगों को हैरान कर देता था।

www.onepointlearning.com

6. **पाठ के आधार पर बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ लिखिए।**

   **उत्तर:** बालगोबिन भगत के मधुर गायन की कई विशेषताएँ थीं:

   - उनके गीत कबीर के सीधे-सादे पद थे, जो उनके कंठ से निकलकर सजीव हो उठते थे।
   - उनका संगीत जादुई था, जो सुनने वालों को भाव-विभोर कर देता था।
   - उनके गीत सुनकर बच्चे झूमने लगते थे, महिलाएँ गुनगुनाने लगती थीं और हलवाहे भी ताल में आ जाते थे।
   - गाते-गाते वे इतने मस्त हो जाते कि ऐसा लगता था कि वे नाचने लगेंगे।
   - उनके गीत अँधेरी रात में भी बिजली की तरह चमक उठते थे, और सारी निस्तब्धता को भंग कर देते थे।

7. **कुछ मार्मिक प्रसंगों के आधार पर यह दिखाइए कि बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। पाठ के आधार पर उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए।**

   **उत्तर:**

   - पुत्र का क्रिया-कर्म: समाज में बेटे को मुखाग्नि देने का अधिकार पिता का होता है, लेकिन बालगोबिन भगत ने यह अधिकार अपनी पुत्रवधू को दिया, जो उस समय की सामाजिक मान्यता के विरुद्ध था।
   - पुत्रवधू का पुनर्विवाह: बालगोबिन भगत ने अपनी पुत्रवधू को उसके भाई के साथ भेजकर उसकी दूसरी शादी कराने का आदेश दिया, जबकि विधवाओं का पुनर्विवाह समाज में उचित नहीं माना जाता था।
   - बेटे की मृत्यु पर शोक न करना: बेटे की मृत्यु पर शोक मनाने की सामाजिक परंपरा के विपरीत, उन्होंने इसे आत्मा और परमात्मा के मिलन का उत्सव मानकर गीत गाए।

8. **धान की रोपाई के समय समूचे माहौल को भगत के स्वर लहरियाँ किस तरह चमत्कृत कर देती थीं? उस माहौल का शब्द-चित्र प्रस्तुत कीजिए।**

   **उत्तर:** धान की रोपाई के समय, आसमान बादलों से घिरा था और ठंडी पुरवाई चल रही थी। समूचा गाँव खेतों में था- कहीं हल चल रहे थे, कहीं रोपनी हो रही थी। बच्चे पानी भरे खेतों में उछल रहे थे और महिलाएँ मेंड़ पर बैठी थीं। इसी माहौल में बालगोबिन भगत अपने गीत गा रहे थे। उनकी स्वर लहरियाँ इतनी मधुर थीं कि वे पूरे माहौल को चमत्कृत कर देती थीं। उनके गीत सुनकर बच्चे झूम उठते थे, महिलाओं के होंठ गुनगुनाने लगते थे, हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते थे और रोपनी करने वालों की उंगलियाँ एक अजीब क्रम से चलने लगती थीं। उनके संगीत का जादू ऐसा था कि वह सारे वातावरण में एक नई ऊर्जा भर देता था।

## रचना और अभिव्यक्ति

9. **पाठ के आधार पर बताएँ कि बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई है?**

   **उत्तर:** बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा निम्नलिखित रूपों में प्रकट हुई है:

   - आदर्शों का पालन: वे कबीर के आदर्शों पर चलते थे, कभी झूठ नहीं बोलते थे और खरा व्यवहार रखते थे।
   - गायन: वे केवल कबीर के गीत ही गाते थे, जिन्हें वे "साहब" मानते थे।

- संपत्ति: वे अपनी हर एक चीज़ को कबीर की संपत्ति मानते थे और जो कुछ भी उनके खेत में पैदा होता था, उसे पहले कबीरपंथी मठ में भेंट के रूप में चढ़ाते थे।
- क्रिया-कर्म: अपने बेटे की मृत्यु के बाद उन्होंने सभी सामाजिक मान्यताओं को दरकिनार कर कबीर के विचारों के अनुसार ही व्यवहार किया, जैसे कि बेटे को मुखाग्नि अपनी पुत्रवधू से दिलवाना।

**10. आपकी दृष्टि में भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के क्या कारण रहे होंगे?**

**उत्तर:** मेरी दृष्टि में भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के कई कारण रहे होंगे:

- निराकार ब्रह्म की उपासना: कबीर निराकार ब्रह्म के उपासक थे, और बालगोबिन भगत भी ईश्वर के इसी स्वरूप में विश्वास रखते थे।
- सामाजिक सुधारक: कबीर ने समाज में फैले पाखंड, दिखावे और कुरीतियों का विरोध किया था, और भगत भी प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे।
- निस्स्वार्थ प्रेम और समानता: कबीर ने बिना किसी भेदभाव के सभी से प्रेम करने का संदेश दिया था। भगत का आचरण भी इसी भावना को दर्शाता था।
- सरल जीवन: कबीर का जीवन और दर्शन बहुत सरल और सीधा था, जो भगत की सादगी भरी जीवनशैली से मेल खाता था।

**11. गाँव का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश आषाढ़ चढ़ते ही उल्लास से क्यों भर जाता है?**

**उत्तर:** आषाढ़ के महीने में वर्षा ऋतु का आगमन होता है, जिससे खेती-बाड़ी का काम शुरू होता है। इस समय किसान धान की रोपाई करते हैं, जो उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कार्य होता है। यह महीना नई फसल की उम्मीद और जीवन में समृद्धि का प्रतीक है। जब गाँव के सभी लोग एक साथ खेतों में काम करते हैं, तो उनके बीच आपसी सहयोग और मेल-मिलाप का माहौल बनता है। बच्चे और महिलाएँ भी इस काम में शामिल होते हैं। यह सामूहिक प्रयास और भविष्य की आशा ही गाँव के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश को उल्लास से भर देती है।

**12. "ऊपर की तस्वीर से यह नहीं माना जाए कि बालगोबिन भगत साधु थे।" क्या "साधु" की पहचान पहनावे के आधार पर की जानी चाहिए? आप किन आधारों पर यह सुनिश्चित करेंगे कि अमुक व्यक्ति 'साधु' है?**

**उत्तर:** "साधु" की पहचान केवल पहनावे के आधार पर नहीं की जानी चाहिए। बालगोबिन भगत के जीवन से यह सिद्ध होता है कि साधुता का संबंध बाहरी वेशभूषा से नहीं, बल्कि आंतरिक गुणों, विचारों और आचरण से होता है। एक व्यक्ति साधु है, यह सुनिश्चित करने के लिए हम निम्नलिखित आधारों को देख सकते हैं:

- निस्स्वार्थ भाव: वह किसी से कुछ नहीं लेता और अपना काम स्वयं करता है।
- सत्यवादिता और ईमानदारी: वह झूठ नहीं बोलता और उसका व्यवहार खरा होता है।
- त्याग और वैराग्य: वह मोह-माया से दूर रहता है और ईश्वर में लीन होता है।
- सेवा भाव: वह दूसरों की मदद करता है और किसी को कष्ट नहीं पहुँचाता।

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

**13. मोह और प्रेम में अंतर होता है। भगत के जीवन की किस घटना के आधार पर इस कथन का सच सिद्ध करेंगे?**

**उत्तर:** मोह और प्रेम में गहरा अंतर होता है। मोह लगाव, स्वार्थ और अधिकार की भावना से जुड़ा होता है, जबकि प्रेम निस्स्वार्थ होता है और दूसरों की भलाई के बारे में सोचता है।

भगत के जीवन में उनके बेटे की मृत्यु की घटना इस कथन का सच सिद्ध करती है। यदि बालगोबिन भगत को अपने बेटे से केवल मोह होता, तो वे उसकी मृत्यु पर विलाप करते और उसे खोने के दुख में डूब जाते। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने अपने बेटे की मृत्यु को आत्मा का परमात्मा से मिलन मानकर उत्सव मनाया। उन्होंने अपनी पुत्रवधू को भी पुनर्विवाह के लिए उसके भाई के साथ भेज दिया, ताकि वह अपना जीवन नए सिरे से शुरू कर सके। यह निस्स्वार्थ प्रेम का उदाहरण है, जहाँ उन्होंने अपनी वृद्धावस्था में अकेले रहने की चिंता किए बिना, अपनी पुत्रवधू के सुख के बारे में सोचा। यह घटना दर्शाती है कि भगत मोह से ऊपर उठकर सच्चा प्रेम करते थे।

## भाषा- अध्ययन

**14. इस पाठ में आए कोई दस क्रिया विशेषण छाँटकर लिखिए और उनके भेद भी बताइए।**

**उत्तर:** इस पाठ से लिए गए कुछ क्रिया-विशेषण और उनके भेद नीचे दिए गए हैं:

**1.** धीरे-धीरे - स्वर ऊँचा होने लगा।
→ भेद: रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (काम करने का तरीका)
**2.** हर वर्ष - गंगा-स्नान करने जाते।
→ भेद: कालवाचक क्रिया-विशेषण (काम होने का समय)
**3.** थोड़ा - बुखार आने लगा।
→ भेद: परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण (काम की मात्रा)
**4.** लगातार - चल रही थी।
→ भेद: रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (काम करने का तरीका)
**5.** कभी-कभी - पतोहू के नज़दीक भी जाते।
→ भेद: कालवाचक क्रिया-विशेषण (काम होने का समय)
**6.** अचानक - बिजली की तरह।
→ भेद: रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (अचानक होने का भाव)
**7.** बाहर - गाँव के बाहर ही, पोखरे के ऊँचे भिंडे पर।
→ भेद: स्थानवाचक क्रिया-विशेषण (जगह का बोध)
**8.** बार-बार - सिर से नीचे सरक जाती।
→ भेद: रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (दुहराव का भाव)
**9.** नजदीक - पतोहू के नजदीक भी जाते।
→ भेद: स्थानवाचक क्रिया-विशेषण (स्थान का बोध)
**10.** सदा-सर्वदा - ही सुनने को मिलते।
→ भेद: कालवाचक क्रिया-विशेषण (समय का बोध)

www.onepointlearning.com